mercredi 21 mars 2012

HIN1B08b

(Compréhension de l'écrit)

Cours – 7

अपना अपना भाग

सेठ घनश्याम दास बहुत बड़ी हवेली में रहता था। उसके तीन लड़के थे। पैसा, नौकर, चाकर, घोड़ा-गाड़ी तो थी ही, मगर उसे अपने ख़ज़ाने में सबसे अधिक प्यार अपने 17 हाथियों से था। हाथियों की देखरेख में कोई कसर न रह जाए, इस बात का उसे बहुत ख़्याल था। उसे सदा यही फ़िक्र रहता था कि उसके मरने के बाद उसके हाथियों का क्या होगा। कुछ समय ऐसे ही बीता और सेठ को महसूस हुआ कि उसका अंतिम समय अब अधिक दूर नहीं है और हाथियों के लिये कुछ प्रबंध करना होगा।

उसने अपने तीनों बेटों को अपने पास बुलाया और कहा कि मेरा समय आ गया है। मेरे मरने के बाद मेरी सारी जायदाद को मेरी वसीयत के हिसाब से आपस में बाँट लेना। एक बात का ख़ास ख़्याल रखना कि मेरे हाथियों को किसी भी किस्म की कोई भी हानि न हो।

कुछ दिन बाद सेठ स्वर्ग सिधार गया। तीनों लड़कों ने जायदाद का बंटवारा पिता की इच्छा अनुसार किया, मगर हाथियों को लेकर सब परेशान होने लगे । कारण था कि सेठ ने हाथियों के बंटवारे में पहले लड़के को आधा, दूसरे को एक तिहाई और तीसरे को नौवाँ हिस्सा दिया था । 17 हाथियों को इस तरह बाँटना एकदम असम्भव लगा । हताश होकर तीनों लड़के 17 हाथियों को लेकर अपने बाग में चले गए और सोचने लगे कि इस विकट समस्या का कैसे समाधान हो ।

तभी तीनों ने देखा कि एक साधू अपने हाथी पर सवार, उनकी ही ओर आ रहा है। साधू के पास आने पर लड़कों ने प्रणाम किया और अपनी सारी कहानी सुनाई। साधू ने कहा कि अरे इस में परेशान होने की क्या बात है। जैसा तुम्हें बताऊँ वैसा करना चाहिये । लो मैं तुम्हें अपना हाथी दे देता हूँ । यह सुनकर तीनों लड़के बहुत खुश हुए। अब सामने 18 हाथी खड़े थे। साधू ने पहले लड़के को बुलाया और कहा कि तुम अपने पिता की इच्छा अनुसार आधे यानि नौ हाथी ले जाओ। दूसरे लड़के को बुलाकर उसने एक तिहाई यानि छ: हाथी दे दिए। छोटे लड़के को उसने बुलाकर कहा कि तुम भी अपना नौंवाँ हिस्सा यानि दो हाथी ले जाओ। नौ जमा छ: जमा दो मिलाकर 17 हाथी हो गए और एक हाथी फिर भी बचा गया। लड़कों की समझ में यह गणित बिलकुल नहीं आया और तीनों साधू महाराज की ओर देखते ही रहे। उन सब को इस हालत में देखकर साधू महाराज मुस्काए और आशीर्वाद देकर तीनों से विदा ले, अपने हाथी पर जिस दिशा से आए थे, उसी दिशा में चले गए। इधर यह तीनों सोच रहे थे कि साधू महाराज ने अपना हाथी देकर कितनी सरलता और भोलेपन से एक जटिल समस्या को सुलझा दिया।

Vocabulaire

सेठ-m magnat	हवेली-f manoir	नौकर-m domestique	चाकर-m employé	ख़ज़ाना trésor
अधिक plus	प्यार-m amour	देखरेख-f soins	कसर-f insuffisance	सदा toujours
फ़िक्र-f souci	बीतना passer	महसूस होना ressentir	अंतिम dernier	समस्या-f difficulté
प्रबंध-m organisation	जायदाद-f propriété	वसीयत-f testament	हिसाब-m calcul	बाँटना diviser
ख़ास spécial	ख़्याल-m idée, pensée	किस्म-f type	हानि-f perte	स्वर्ग-m paradis
सिधारना partir	इच्छा-f volonté	अनुसार selon	परेशान harcelé	बंटवारा-m partage
तिहाई-m tiers	असम्भव impossible	हताश découragé	विकट sévère	जटिल compliqué
समाधान-m solution	यानि c-à-dire	जमा cumule	बचना rester	गणित-m maths
हालत-f condition	विदा-लेना prendre congé	सरलता-f facilité	भोलापन-m naïveté	

Questions

Quel était le souci du magnat ?

Qu'est-ce qu'il aimait le plus ?

Quelle instruction a-t-il donné à ses fils ?

Pourquoi ses fils étaient-ils perplexes ?

Comment le sadhou a résolu le problème ?

Quelle leçon tirez-vous de cette histoire ?